बिहार दिवस–2022 के समापन समारोह के अवसर पर
महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक 24.03.2022, समय–अप० 05:30 बजे, स्थान–गाँधी मैदान, पटना)

बिहार दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस पावन अवसर पर मैं समस्त बिहारवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

वैदिक और पौराणिक काल से यह क्षेत्र अपने वैभव और गरिमा के लिए याद किया जाता है। राजर्षि जनक, ऋषि विश्वामित्र, चाणक्य और चन्द्रगुप्त की यह भूमि है। आत्मज्ञान और आत्म विद्या के महान ज्ञाता याज्ञवल्क्य एवं अष्टावक्र का संबंध बिहार से रहा है। वाल्मीकि ने अपने आश्रम में माँ सीता को संरक्षण दिया था और आदिकाव्य रामायण की रचना यहीं की थी।

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से भी यह भूमि वैभव सम्पन्न रहा है। प्राचीन काल में इसे मगध के नाम से जाना जाता था जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। चाणक्य और चन्द्रगुप्त जैसे महापुरूषों ने पूरी दुनिया में अपनी यश का पताका फहराया था। मौर्य वंश के महान शासक सम्राट अशोक का साम्राज्य अफगानिस्तान तक फैला हुआ था और उनके कीर्ति की चर्चा चारों ओर थी।

धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से बिहार की अपनी पहचान रही है। यह भगवान बुद्ध, भगवान महावीर और गुरू गोबिन्द सिंह की पवित्र धरती है। यहाँ सूफी संतों ने धार्मिक जागरण एवं सद्भावना बढ़ाने का कार्य किया। विश्व के प्राचीनतम एवं समृद्ध 3 विश्वविद्यालयों में से दो –नालंदा विश्वविद्यालय एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय बिहार में थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस प्रदेश की यात्रा की और इसके गौरवशाली परंपरा एवं समृद्ध समाज की चर्चा अपने यात्रा वृतांत में की है। विश्व के प्राचीन एवं श्रेष्ठ गणितज्ञ आर्यभट्ट की प्रयोगशाला पटना के पास तारेगना एवं खगौल में थी। इस प्रदेश में जगह–जगह पर बौद्ध विहार बने थे, इसलिए इस प्रदेश का नाम कालान्तर में बिहार हुआ।

आधुनिक समय में महात्मा गाँधी ने नीलहे अंग्रेजों के अत्याचार के विरोध में पूर्वी चम्पारण में सत्याग्रह का प्रयोग किया और बरहड़वा लखनसेन में प्रथम विद्यालय की स्थापना की, जहाँ उनकी पत्नी कस्तूरबा ने शिक्षिका का काम किया था।

बिहार वीर कुँवर सिंह जैसे महान योद्धा की भी जन्मभूमि है। आजादी की लड़ाई में बिहारवासियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया तथा हजारों लोगों ने अपने प्राण उत्सर्ग कर दिए। सात युवकों ने अपने प्राणों की आहूति देकर सचिवालय भवन पर तिरंगे को फहराया, जिनका स्मारक बिहार विधान मंडल के सामने है।

वर्ष 1893 में डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा ने महेश नारायण, नंद किशोर लाल, अली इमाम, मौलाना सर्फुद्दीन, दीप नारायण सिंह आदि लोगों के सहयोग से बिहार को अलग प्रांत बनाने के लिए आंदोलन शुरू किया। बिहार टाईम्स और बिहारी अखबार निकाले गये। 12 दिसम्बर, 1911 को दिल्ली दरबार में किंग इम्पेरर ने बिहार को बंगाल से अलग करने की घोषणा की तथा 22 मार्च, 1912 को पृथक बिहार और उड़ीसा प्रदेश के गठन की घोषणा की गई।

बिहार देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डॉ० श्रीकृष्ण सिंह, पंडित विनोदानन्द झा, कर्पूरी ठाकुर, भोला पासवान शास्त्री, जगजीवन राम और दशरथ माँझी जैसे महान विभूतियों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है।

संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में बिहार का उल्लेखनीय योगदान रहा है। आदिकवि वाल्मीकि, कवि कोकिल विद्यापति तथा आधुनिक समय के रामधारी सिंह दिनकर, फणीश्वरनाथ रेणु, रामवृक्ष बेनीपुरी, बाबा नागार्जुन, जानकीवल्लभ शास्त्री, आर०सी० प्रसाद सिंह एवं गोपाल सिंह नेपाली जैसे महान साहित्यिक विभूति बिहार के ही थे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बिहार सरकार अपने गौरवशाली अतीत एवं महापुरूषों को याद करने और बिहार के बेहतर भविष्य का संकल्प लेने के लिए वर्ष 2009 से बिहार दिवस का आयोजन कर रही है।

इस वर्ष 22 मार्च से बिहार में राज्य, जिला, प्रखण्ड एवं पंचायत स्तर पर बिहार दिवस का आयोजन किया जा रहा है। मुझे जानकारी मिली है कि पटना के गाँधी मैदान एवं श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में देश एवं राज्य के श्रेष्ठ एवं ख्यातिप्राप्त कलाकारों द्वारा एक से बढ़कर एक शानदार प्रस्तुति दी गई है।

बिहार दिवस के अवसर पर राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी लोगों को दी जा रही है। यहाँ विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी संचालित की जा रही हैं। मद्य निषेध अभियान के लिए जन जागरूकता पैदा की जा रही है। व्यंजन मेला भी लगाया गया है। बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साह और उमंग के साथ बिहार दिवस के समारोह में भाग लिया है।

इस प्रकार के आयोजन के द्वारा आम जनता के बीच अपनी संस्कृति और परंपरा एवं अपने महापुरूषों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता का भाव जगाने में सहायता तथा भावी जीवन के लिए प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर हमें बिहार के समग्र विकास एवं इसके नव–निर्माण में भरपूर योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए।

मैं एक बार पुनः बिहार दिवस के पावन अवसर पर समस्त बिहारवासियों और बिहारवंशियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय बिहार, जय भारत।

***